Toppersnotes
Unleash the topper in you

1ST – ग्रेड

स्कूल व्याख्याता

राजस्थान लोक सेवा आयोग (RPSC)

प्रथम – प्रश्न पत्र

भाग – 2

भारत का इतिहास, राजव्यवस्था एवं राजस्थान का भूगोल

SIERRA INNOVATIONS

RPSC 1ST GRADE – 2021

भारत का इतिहास, राजव्यवस्था एवं राजस्थान का भूगोल

क्र.सं.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
	भारत का इतिहास	
1.	मौर्य साम्राज्य में कला, साहित्य, विज्ञान	1
2.	गुप्तकाल में कला, विज्ञान, साहित्य का विकास	6
3.	मुगलकाल में शिक्षा, भाषा, साहित्य, स्थापत्य कला का विकास	12
4.	शिवाजी एवं मराठा साम्राज्य	21
5.	भारत के प्रमुख राष्ट्रवादी नेता	25
6.	प्राचीन भारत में शिक्षा	36
7.	ब्रिटिश भारत में शिक्षा	41
8.	राजस्थान का इतिहास	46
9.	भक्ति आन्दोलन	65
10.	1857 का स्वतंत्रता आन्दोलन	77
11.	महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आन्दोलन	80
12.	सामाजिक–धार्मिक पुनर्जागरण	91
13.	1857 की क्रान्ति (राजस्थान)	94
14.	राजस्थान में किसान आन्दोलन	99
15.	महाराणा प्रताप का मुगलों से संघर्ष	106
16.	विजयसिंह पथिक, अर्जुनलाल सेठी, केसरी सिंह बारहठ, जोरावर सिंह बारहठ	108
	भारत का संविधान	
1.	संविधान सभा का उद्भव एवं संविधान निर्माण	112
2.	कार्यपालिका, मंत्रिपरिषद् एवं उसके कार्य	122
3.	राष्ट्रपति एवं उसकी शक्तियाँ	133

4.	प्रधानमंत्री और उसकी शक्तियाँ	144
5.	संसद	147
6.	लोकसभा अध्यक्ष एवं उसके कार्य	157
7.	उच्चतम न्यायालय : संगठन एवं शक्तियाँ	159
8.	उच्च न्यायालय	162
9.	भारत में चुनाव	166
10.	भारत में नौकरशाही व्यवस्था	169
11.	राजनीतिक दल एवं उनकी भूमिका	174
12.	राष्ट्रीय स्तर के विभिन्न आयोग एवं प्रमुख बोर्ड	178

राजस्थान का भूगोल

1.	राजस्थान की अवस्थिति, आकृति, आकार एवं विस्तार	186
2.	राजस्थान का भौतिक विस्तार	201
3.	राजस्थान की जलवायु	233
4.	राजस्थान की खनिज संपदा	243
5.	राजस्थान में ऊर्जा संसाधन	258
6.	राजस्थान में कृषि	269
7.	राजस्थान में पर्यटन उद्योग	280
8.	राजस्थान में परिवहन	287
9.	राजस्थान में औद्योगिक परिदृश्य	303

1. मौर्य साम्राज्य 323 ई.पू.–185 ई.पू. कला, साहित्य, विज्ञान

चन्द्रगुप्त मौर्य (323 ई.पू. –198 ई.पू.)

- मौर्य साम्राज्य की स्थापना चन्द्रगुप्त मौर्य ने 323 ई. पू. में की थी।
- चन्द्रगुप्त ने मगध के नन्दवंश के राजा घनानन्द को हराकर मौर्य साम्राज्य की स्थापना की थी ।
- चन्द्रगुप्त मौर्य ने अपने गुरू कौटिल्य की सहायता से नन्दवंश का साम्राज्य समाप्त कर भारत में अखिल भारत में अखिल मौर्य वंश का साम्राज्य स्थापित किया गया। चन्द्रगुप्त मौर्य को भारत का प्रथम ऐतिहासिक सम्राट और मुक्तिदाता माना जाता है। चन्द्रगुप्त मौर्य कौन था, इस पर विद्वान एक मत नहीं है जैसे – ब्राह्मण ग्रंथ और पुराण शुद्ध बताते हैं। विशाखादत्त की मुद्राराक्षस में इसे वृषल और कुलहीन बताया गया है जबकि चाणक्य, जैनग्रन्थ एवं बौद्धग्रन्थ इसे क्षत्रिय बताते हैं जबकि स्पूनर इसे पारसी बताते हैं।
- चन्द्रगुप्त मौर्य ने मगध, पंजाब, येल्केतु आदि क्षेत्रों को जीता इसके बाद सिकन्दर के सेनापति सेल्यूकस से 305 ई. पू. में युद्ध हुआ जिसमें चन्द्रगुप्त ने सेल्यूकस को हरा दिया और उसके साथ संधि–समझौता किया– इसमें चार क्षेत्र सेल्यूकस ने चन्द्रगुप्त को दिये (1) काबुल (2) कंधार (3) हैरात (4) मकराना (बलूचिस्तान) और अपनी पुत्री हेलना का विवाह भी चन्द्रगुप्त मौर्य के साथ कर दिया है जो भारत का पहला अन्तर्राष्ट्रीय विवाह माना जाता है।
- चन्द्रगुप्त मौर्य ने इसके बदले सेल्यूकस को 500 हाथी दिये। दोनो शासकों के बीच राजदूतों का भी आदान–प्रदान किया गया। जिसमें सेल्यूकस का राजदूत मेगस्थनीज चन्द्रगुप्त के दरबार में आया।
- मेगस्थनीज भारत का इतिहास लिखने वाला पहला विदेशी इतिहासकार था।
- चन्द्रगुप्त मौर्य को यूनानी लेखकों ने सैण्ड्रोकोट्स व एण्ड्रोकोट्स नाम से सम्बोधित किया गया है।
- रूद्रदामन के जूनागढ (गुजरात) अभिलेख से विधीत हुआ है कि चन्द्रगुप्त मौर्य के शासन काल में सौराष्ट्र के गिरनार नामक पर्वत पर गवर्नर पुण्यगुप्त वैश्य के द्वारा सुदर्शन झील का निर्माण किया गया।
- चन्द्रगुप्त मौर्य अन्त में जैन भिक्षु भद्रबाहु के साथ दक्षिणी भारत के श्रवणबेलगोला (मैसूर) चला जाता है और वहीं चन्द्रगिरी पर्वत पर चन्द्रगुप्तवास्ती मंदिर में सुलेखना पद्धति के द्वारा अपने प्राण त्याग देता है।
- चन्द्रगुप्त मौर्य ने अपने मौर्य साम्राज्य की राजधानी पाटलिपुत्र को बनाया ।
- चन्द्रगुप्त मौर्य ने कौटिल्य राजकीलम खेल के द्वारा प्रभावित किया।
- कौटिल्य चन्द्रगुप्त मौर्य का गुरू व प्रधानमंत्री था।
- चन्द्रगुप्त मौर्य द्वारा निर्मित सुदर्शन झील की मरम्मत का कार्य तीन राजाओं ने कराया जो क्रमशः निम्न है (1) अशोक मौर्य (2) रूद्रदामन (3) स्कन्ध गुप्त

बिन्दुसार (298 ई.पू.–272 ई.पू.)

- चन्द्रगुप्त मौर्य के बाद उसका पुत्र बिन्दुसार मौर्य साम्राज्य का शासक बना। इसे अमित्रघात यूनानी लेखकों ने कहा है जबकि वायुपुराण में भद्रसार जैन ग्रन्थों में सिंहसेन कहा गया है।
- इसके शासनकाल के प्रारम्भ में कौटिल्य बाद में खल्नाटक प्रधानमंत्री बना।
- इसके दरबार में सीरिया का डायमेकस और मिश्र का डायोनिसस राजदूत आये थे।
- यह आजीवक सम्प्रदाय का अनुयायी था।
- दिव्यदान के अनुसार इसके समय ने तक्षशिला अन्त में दो विद्रोह हुए जिसे अशोक और सुसीम के द्वारा दबाये गये।
- बिन्दुसार की 272 ई. पू. मृत्यु हो जाती है और उसके बाद उसका बेटा अशोक मौर्य साम्राज्य का शासक बना।

अशोक (272 ई.पू.–232 ई.पू.)

- अशोक का राज्यारोहण 272 ई. पू. हुआ लेकिन वह चार वर्ष तक उपने भाइयों से उत्तराधिकारी का युद्ध लड़ता रहा और अन्त में 269 ई. पू. उपना औपचारिक राज्याभिषेक करवाता है। इसके तीन नाम थे – अशोक देवानाम प्रिय, प्रियदर्शीराजा, जबकि पुराणों में अशोक वर्धन कहा गया है।
- सिंहली जनश्रुती के अनुसार अशोक ने अपने 99 भाईयों की हत्या करके सिंहासन प्राप्त किया।
- अशोक का व्यक्तिगत धर्म बौद्धधर्म था। प्रारम्भ में वह ब्राह्मण धर्म का अनुयायी था और शिव का उपासक था लेकिन अपने राज्यभिषेक के 8 वें वर्ष कलिंग (उड़ीसा) के युद्ध में नन्दराज शासक को हराकर बौद्धधर्म को स्वीकार किया।
- उपगुप्त नामक बौद्ध भिक्षु ने अशोक को बौद्ध धर्म की दीक्षा दी।
- अशोक सम्राट बनने से पहले उज्जैन का सुबेदार था।
- भारत में शिलालेख का प्रचलन सर्वप्रथम अशोक ने किया जो कि ईरानी शासक दारा प्रथम (डेरियस) की प्रेरणा स्वरूप से करता है।
- अशोक के अधिकांश शिलालेखों में प्राकृत भाषा और ब्राह्मी, खरोण्ठी और ग्रीक लिपि का प्रयोग किया गया।
- भारत में मौर्यकाल के समय ही काष्ठ के स्थान पर पत्थर का उपयोग शुरू हुआ और अशोक ने अपने तीन प्रकार के अभिलेखों का प्रचलन किया।
  (1) शिलालेख
  (2) स्तम्भलेख
  (3) गुहालेख
- अशोक के कुल स्तम्भो की संख्या 17 थी। अशोक के स्तम्भों में उसके पुत्र तीवर और पत्नी कारूवाकी का ही उल्लेख मिलता है।
- मौर्यकाल में जनसाधारण की भाषा पाली थी जबकि अशोक की राजभाषा प्राकृत थी । अशोक के समय मौर्य साम्राज्य निम्न पाँच प्रान्तों में विभाजित था।

प्रान्त	**राजधानी**
उत्तरापथ	तक्षशिला
दक्षिणापथ	स्वर्णगिरी
अवन्तिराष्ट्र	उज्जैन
कलिंग	तोसली
प्राची (मध्यप्रदेश)	पाटलिपुत्र

- अशोक के अभिलेखों में कापड़ (चापड़) नामक एकमात्र अभिलेख में लेखक का नाम मिलता हैं।
- कौशाम्बी अभिलेख को रानी का अभिलेख भी कहते है।
- रूद्रदामन का जूनागढ़ अभिलेख में चन्द्रगुप्त मौर्य व अशोक दोनों के नाम है।
- अशोक स्तम्भों की कुल संख्या 17 थी जिसमें निम्न 14 वृहत शिलालेख है –
  - पहला अभिलेख – पशुहत्या पर प्रतिबन्ध।
  - दूसरा अभिलेख – समाज कल्याण, धर्म, चिकित्सा सुविधा, मार्ग निर्माण, कुँआ खोदना एवं वृक्षारोपण का उल्लेख।
  - तीसरा अभिलेख – युक्त, रज्जुक और प्रादेशिक।

- चौथा अभिलेख – धम्म नीति से सम्बंधित महत्वपूर्ण विचार ब्राह्मणों, श्रमणों के प्रति आदर।
- पांचवाँ अभिलेख – अशोक के राज्यरोहण के 13 वें वर्ष के बाद धम्म महामात्र की नियुक्ति का उल्लेख।
- छठवाँ अभिलेख – आत्म नियंत्रण व प्रतिवेदकों की सूचना।
- सातवाँ अभिलेख – धम्म का स्पष्ट स्वरूप, सभी सम्प्रदायों के लिये सहिष्णुता की बात।
- आठवाँ अभिलेख – सम्राट अशोक द्वारा आखेटन का त्याग तथा उसके स्थान पर धम्म यात्रा करने सूचना।
- नौवाँ अभिलेख – खर्चीले समारोह की निंदा एवं रोक। जैसे – जन्म, विवाह आदि।
- दसवाँ अभिलेख – ख्याति व गौरव की निंदा।
- ग्यारहवाँ अभिलेख – धम्म नीति की व्याख्या।
- बरहवाँ अभिलेख – विभिन्न सम्प्रदायों के मध्य सहिष्णुता पर बल तथा सर्वधर्म समभाव की अवधारणा।
- तेरहवाँ अभिलेख – सबसे महत्वपूर्ण अभिलेख है।
  - कलिंग विजय, उसके हृदय परिवर्तन तथा उसके द्वारा बौद्ध धर्म अपनाने की सूचना। युद्ध विजय के बदले धम्म विजय पर बल। अशोक की विदेशनीति पर प्रकाश।
- चौदहवाँ अभिलेख – अपेक्षाकृत कम महत्वपूर्ण है। सभी अभिलेखों में लेखकों द्वारा की गई गलतियों का उल्लेख है।

सांस्कृतिक क्षेत्र में योगदान

- भारत में शिलालेख का प्रचलन सर्वप्रथम अशोक ने किया जिसकी प्रेरणा ईरानी शासक दारा प्रथम (डेरियस) से मिलती है।
- मौर्यकाल में काष्ठ के स्थान पर पत्थर का उपयोग किया गया।
- अशोक ने बौद्ध धर्म प्रचार के लिए पुत्र महेन्द्र और पुत्री संघमित्रा को श्रीलंका भेजा।
- प्रशासनिक व्यवस्था के जनक मौर्य माने जाते है।
- 1750 ई. में टिफेन्थैलर ने सबसे पहले दिल्ली में अशोक के स्तम्भ का पता लगाया किन्तु इनको सर्वप्रथम जेम्स प्रिंसेप ने 1837 ई. में पढ़ा।
- 1915 ई. में ब्रीडेन ने अशोक के अंतिम शिलालेख की खोज की ।
- अशोक के स्तम्भ में क्रमशः निम्न मूर्तियों को बनाया गया है– हाथी, घोड़ा, बैल, सिंह।
- स्तूप – समाधियाँ,
- विहार – बौद्ध संघ निवास स्थल
- चैत्य – पूजा और आराधना स्थल
- गुफाएँ – पहाड़ों को काटकर बना स्थान
- मौर्य काल में जनसाधारण की भाषा पाली थी। अशोक की राज भाषा प्राकृत थी।
- अशोक के अधिकांश अभिलेख ब्राह्मी लिपि एवं प्राकृत भाषा में प्राप्त होते हैं।
- अशोक ने पाटलिपुत्र में तृतीय बौद्ध संगीति (250 ई. पू.) का आयोजन किया जिसके अध्यक्ष मोगलिपत्ततिस्स थे।
- राज्याभिषेक से सम्बन्धित मास्की के लघु शिलालेख में अशोक ने स्वयं को बुद्ध शाक्य कहा।

- मेगस्थनीज द्वारा रचित इंडिका के अनुसार मौर्य कालीन समाज 7 जातियों में बँटा हुआ था–
  1. ब्राह्मण या दार्शनिक
  2. किसान (सबसे ज्यादा)
  3. अहीर या ग्वाले
  4. कारीगर या शिल्पी
  5. सैनिक
  6. निरीक्षक / गुप्तचर
  7. सभासद या मंत्री या परामर्शदाता
- मास्की, गुर्जरा, उदयगोलम तथा नेट्टर से प्राप्त लेखों में अशोक के स्वयं का नाम है।
- अशोक के अभिलेखों को तीन श्रेणियों में रखा जाता है –
  1. शिलालेख
  2. स्तम्भलेख
  3. गुहालेख
- तीसरी शताब्दी में भारत में तीन राज वंशो का उदय हुआ–

  पश्चिम में – नागवंश

  दक्षिण में – वाकाटक वंश

  पूर्व में – गुप्त वंश

मौर्यकालीन कला, साहित्य, विज्ञान

मौर्यकालीन कला

(1) राजप्रसाद

- मुद्राराक्षस में चन्द्रगुप्त के महलों को सुगाङ्ग कहा गया है जो लकड़ी का बना था।

(2) नगर निर्माण

- पाटलिपुत्र राजधानी को पालिब्रोथा, पालिबोत्रा, पालिमबोत्र कहा है।
- यह चतुर्भुजाकार रूप में बसा था।
- नगर के चारों ओर लकड़ी की प्राचीर थी।
- अशोक ने श्री नगर, ललितपाटन दो नगर बसाये थे।

(3) स्तूप निर्माण

- स्तूप का पहला उल्लेख ऋगवेद में मिलता है। स्तूप का शाब्दिक अर्थ है – ढेर या थूहा।
- सांची का स्तूप अशोक ने बनवाया था।
- सारनाथ स्तूप (धमेख स्तूप) धरातल पर निर्मित है न कि चबुतरे पर।

(4) स्तंभ निर्माण

- लौरिया नन्दगढ़ स्तंभ – शीर्ष पर सिंह
- संकिसा स्तंभ – विशाल हाथी
- रामपुरवा बिहार – वृषभ
- लौरिया अरराज – गरूड़

(5) गुफा निर्माण

- बिहार की बाराबार, नागार्जुनी पहाड़ियों में गुहाओं का विकास।
- नागार्जून गुफाओं की खोज – हेरिंगटन (1786)
- अशोक द्वारा निर्मित गुफा – कर्णचोपड़, सुदामा, विश्व झोपड़ी, लोमस ऋषि गुफा (सर्वाधिक प्रसिद्ध)

मौर्यकालीन विज्ञान का विकास

- धातु प्रगलन, कांसे का निर्माण, गोदीबाड़ा का निर्माण।
- अथर्ववेद में चिकित्सा प्रणाली का विवरण।
- ऋग्वेद के भाग आयुर्वेद में संपूर्ण चिकित्सा विज्ञान प्रणाली का उल्लेख मिलता है।
- चरक संहिता में रोग निदान प्रणाली का विवरण है ।

मौर्यकालीन साहित्य

अर्थशास्त्र

- अर्थशास्त्र (कौटिल्य) एक राजनीति से जुड़ा पहला ग्रंथ माना जाता है।
- अर्थशास्त्र में 15 अधिकरण व 180 प्रकरण है।
- अर्थशास्त्र के पहले अधिकरण में राज्य की समस्या ज्ञान की शाखाओं का विवरण है, वहीं 15 वें अधिकरण में प्रमुख परिभाषाओं को स्पष्ट किया गया है।
- अर्थशास्त्र में उच्च स्तर के कर्मचारियों को तीर्थ कहा है। इसमें कुल अठारह तीर्थों का उल्लेख है।

इण्डिका मेगस्थनीज

- मौर्यकालीन साम्राज्य का प्रकाश
- इण्डिका का अंग्रेजी में अनुवाद किड्रल महोदय ने किया है।
- इस पुस्तक में सैन्य प्रशासन, राजस्व प्रशासन, उत्तरापथ का वर्णन, दर्दिस्तान के सोने की खानों का वर्णन है।
- जिला या जनपद के अधिकारी– एग्रोनोमाई कहलाता था।

2. गुप्तकाल में कला, विज्ञान, साहित्य का विकास

- तीसरी शताब्दी के अन्त में प्रयोग के निकट कौशाम्बी में गुप्त वंश का उदय हुआ।
- गुप्त वंश का संस्थापक श्री गुप्त को माना जाता है। (275 ई.)
- गुप्त वंश को भारतीय इतिहास का स्वर्णकाल माना जाता है, क्योंकि इस काल में कला, साहित्य और विज्ञान के क्षेत्र में सबसे ज्यादा उन्नति हुई ।
- बर्नेट इतिहासकार ने इसकी तुलना पेरीक्लीज युग से की है।
- इस युग में ब्रह्मा, विष्णु और महेश की त्रिमूर्ति के रूप में पूजा शुरू हुई।
- गुप्तकाल में सबसे ज्यादा विष्णु की पूजा होती थी (इष्टदेव)। भारत में मंदिरो का उदय या जन्म गुप्तकाल में ही हुआ।
- गुप्तकाल में ही रामायण और महाभारत का अन्तिम रूप से सम्पादन हुआ।
- गंगा, जमुना की मूर्ति गुप्तकाल की देन है।
- गुप्तकाल में सांमतवाद का उदय हुआ।
- अजन्ता की गुफा (औरंगाबाद म.प्र.) सं. 16,17,19 गुप्त काल की ही देन है तथा बाघ की गुफाएँ भी गुप्तकाल में बनी। अजन्ता की गुफाएँ बौद्ध धर्म से सम्बन्धित है।
- गुप्त शासकों की भाषा संस्कृत और लिपि ब्राह्मी थी।
- गुप्त सम्राटों का राष्ट्रीय प्रतीक गरूड़ था।
- गुप्त काल के प्रसिद्ध दो बन्दरगाह थे।
  1. भड़ोच 2. ताम्रलिपि
- गुप्तकाल की शिल्पकला का जन्म विशेषतः मथुरा शैली के प्रतीमानों पर आधारित है।
- गुप्तकाल का महरौली का लौह स्तम्भ (दिल्ली) उस समय की वास्तुकला का उत्कृष्ट उदाहरण है।
- गुप्त सम्राट वैष्णव धर्म के अनुयायी थे । गुप्तकाल में दास प्रथा विद्यमान थी लेकिन दहेज प्रथा, पर्दाप्रथा, बालविवाह विद्यमान नहीं थी।
- गुप्त साम्राज्य की आय का मुख्य स्त्रोत भूमिकर था जो कि उपज का 1/6 भाग था ।
- गुप्त कालीन राजस्थान के तीन गणराज्य थे।
  (1) अर्जुनायन (2) मालव (3) यौधेय
- गुप्त साम्राज्य से निम्न प्रमुख शासक हुए –
  (1) श्री गुप्त 275 – 300 ई. (संस्थापक)
  (2) घटोत्कच 300 – 310 ई. (महाराज की उपाधि)
  (3) चन्द्रगुप्त प्रथम 319 / 320 – 328/335 ई.
    - वास्तविक संस्थापक
    - महाधिराज की उपाधि धारण करने वाला
    - राजा – रानी के सिक्के चलाने वाला
    - गुप्त संवत् की स्थापना – 319 ई.
    - लिच्छवी राजकुमारी से विवाह ओर कुमार देवी से विवाह

(4) समुद्रगुप्त 328 ई.–335 ई.
- विंसेट स्मिथ ने इनको भारत का नेपोलियन कहा है।
- मूलनाम – कच
- इसके समय प्रयाग प्रशस्ति हरिषेण द्वारा लिखी गई।
- सबसे प्रतापी शासक था।
- 100 युद्धों का विजेता + धर्म की प्राचीर + कवि राजा की उपाधि

(5) रामगुप्त 375 ई.

(6) चन्द्रगुप्त द्वितीय 375 ई.– 414/415 ई. (अन्य नाम – देवगुप्त, देवश्री, देवराज)
- विक्रमादित्य की उपाधि धारण की।
- प्रथम चीनी यात्री फाह्यान आया।
- इसे सक्कारी भी कहा जाता है।
- इसके दरबार में 9 रत्न थे–
- कालिदास, धन्वन्तरी, अमरसिंह, बेताल भट्ट शंकु, क्षपणक, वराहमिहिर, बररूची, घटकपरि

(7) कुमारगुप्त (414–455 ई.)
- श्री महेन्द्र, महेन्द्रादित्य की उपाधि
- नालन्दा विश्वविद्यालय की स्थापना की।
- सर्वाधिक अभिलेख, सर्वाधिक सिक्कों का प्रचलन किया।

(8) स्कन्द गुप्त (455–467 ई.)
- हुणों (मलेच्छों) पर विजय प्राप्त की
- सुदर्शन झील की मरम्मत करवायी
- चीन में 466 ई. में राजदूत को भेजा
- अन्तिम शासक – भानुगुप्त/विष्णुगुप्त
- गुप्त काल में विज्ञान और तकनीकी क्षेत्र में बहुत अधिक उन्नति हुई।

गुप्त काल में निम्न प्रमुख वैज्ञानिक/विद्वान हुए–

(1) आर्यभट्ट – यह एक प्रमुख वैज्ञानिक और गणितज्ञ थे। इनका जन्म 476 ई. में कुसुमपुर पटना में हुआ। आर्यभट्ट ने ही शून्य सिद्धान्त और दशमलव प्रणाली का विकास किया। इनकी दो पुस्तके प्रसिद्ध हैं– आर्यभट्टीय और सूर्य सिद्धान्त।

(2) वराहमिहिर– यह एक खगोलशास्त्री थे। इनका जन्म अवन्ती में हुआ। इन्होंने प्रसिद्ध पुस्तक पंच सिद्धान्तिका लिखी इसके अलावा वृहतसंहिता व लघु जातक भी इन्होंने लिखी।

(3) धन्वन्तरी – इन्हें चिकित्सा शास्त्र का जनक माना जाता है। इनकी प्रसिद्ध पुस्तक निघण्टु है।

(4) ब्रह्मगुप्त – यह एक गणितज्ञ और खगोलशास्त्री थे।

(5) सुश्रुत – यह एक वैद्य थे। इन्होंने प्रसिद्ध ग्रन्थ सुश्रुत संहिता लिखी थी। यह शल्य चिकित्सा के जनक भी माने जाते हैं।

(6) पॉलकाव्य ने हस्तायुर्वेद नामक ग्रन्थ की रचना की जो हाथियों की चिकित्सा से संबंधित है।

(7) शालिहोत्र ऋषि– इन्होंने घोड़े के उपचार के लिये अश्वशास्त्र नामक ग्रन्थ की रचना की।

कला और साहित्य

- गुप्तकाल में कला और साहित्य के क्षेत्र में भी उन्नति हुई जिसके कारण इस युग को स्वर्णयुग कहा जाता है।
- इस युग में साहित्य के क्षेत्र में बहुत ज्यादा विकास हुआ। कई महत्वपूर्ण कवि, साहित्यकार, विद्वान और कथाकार हुए है। जैसे – कवि कालिदास, विशाखदत्त, दण्डिन, अमरसिंह, भाष, वत्सभट्टी आदि। इन्होंने कई महत्वपूर्ण रचनाओं का निर्माण भी किया।
- गुप्तकाल में पहली बार किसी सती होने के प्रमाण 510 ई. के भानुगुप्त के एरण अभिलेख में मिलता है। राजा गोपराज की पत्नी सती होती है।
- अजन्ता की खोज सर जेम्स अलेक्जेंडर ने की थी।
- 16 वीं गुफा में बुद्ध के गृहत्याग का चित्रण।
- 17 वीं गुफा में बुद्ध अपनी पत्नी से भिक्षा मांगने के चित्र।
- 17 वीं गुफा के चित्रों को चित्रशाला कहा गया है।
- ब्रह्मगुप्त ने न्यूटन के गुरूत्वाकर्षण के सिद्धान्त को न्यूटन से पहले खोजा था।
- नागार्जुन रसायन व धातु विज्ञान का विद्वान था।

गुप्तों की उत्पत्ति के बारे में विद्वानों के मत निम्न हैं –

विद्वान	मत
के. पी. जयसवाल	शूद्र
एलन अलतेकर, रोमिलाथापर	वैश्य
गौरीशंकर ओझा, रमेशचंद्र मजुमदार, चट्टोपाध्याय	क्षत्रिय
हेमचन्द्र राय चौधरी	ब्राह्मण

कला और साहित्य (गुप्तकाल में सांस्कृतिक योगदान)

- कला और साहित्य के विकास की दृष्टि से गुप्तकाल को भारतीय इतिहास का ''क्लासिकी युग अथवा स्वर्णयुग'' कहा गया है।
- गुप्तकाल में ही मंदिर निर्माण कला का जन्म हुआ था।

गुप्तकाल के प्रमुख मंदिर–

भूमरा (नागोद)– मध्यप्रदेश – शिव मंदिर (सबसे पहला और प्राचीन)
तिगवा (जबलपुर) – मध्यप्रदेश – विष्णु मंदिर
देवगढ़ (झाँसी) – उत्तरप्रदेश – दशावतार मंदिर
सिरपुर (मध्यप्रदेश) – लक्ष्मण मंदिर (ईंटो का मंदिर)
भीतरगाँव (कानपुर) – ईंटो का मंदिर

- सर्वाधिक मंदिर और सर्वाधिक पूजा विष्णु देवता की होती थी, ये गुप्त शासकों के ईष्ट देवता थे।
- सम्राटों का राष्ट्रीय प्रतीक गरूड़ था।
- गुप्तकाल में ब्रह्मा, विष्णु और महेश (शिव) की त्रिमूर्ति के रूप में पूजा प्रारम्भ हुई।

सुदर्शन झील के निर्माण और जीर्णोद्धार से सम्बन्धित विवरण –

	अधिकारी
गुप्त मौर्य (निर्माण)	पुष्यगुप्त – मौर्यवंश
अशोक (जीर्णोद्धार)	तुषास्फ – मौर्यवंश
रूद्रदामन (जीर्णोद्धार)	सुविशाख – सातवाहन वंश
स्कन्दगुप्त (जीर्णोद्धार)	चक्रपालित – गुप्त वंश

गुप्तकाल की महत्वपूर्ण रचनाएँ

पुस्तक	**लेखक**	**पुस्तक**	**लेखक**	**पुस्तक**	**लेखक**
कुमार संभव	कालिदास	चारूदत्ता	भास	वृहत्संहिता	वराहमिहिर
रघुवंश	कालिदास	अरूभंग	भास	पंचसिद्धांतिका	वराहमिहिर
ऋतु संहार	कालिदास	हर्षचरित	बाण	ब्रह्म सिद्धांत	आर्य भट्ट
मेघदूत	कालिदास	कादम्बरी	बाण	आर्य भट्टीयम	आर्य भट्ट
मालविकाग्निमित्रम्	कालिदास	नागानन्द	हर्ष	सूर्य सिद्धांत	आर्य भट्ट
अभिज्ञानशांकुतलम्	कालिदास	प्रियदर्शिका	हर्ष	न्यायावतार	सिद्धसेन
विक्रमोर्वशीयम	कालिदास	रत्नावली	हर्ष	पंचतन्त्र	विष्णु शर्मा
मुद्राराक्षस	विशाखदत्त	किरातार्जुनियम	भारवि	नीतिशास्त्र	कामंदक
देवी चन्द्रगुप्त	विशाखदत्त	रावण वध	वत्सभट्टि	कामसूत्र	वात्स्यायन
काव्यदर्शन	दण्डिन	अमर कोष	अमर सिंह	चरक संहिता	चरक
दशकुमार चरित	दण्डिन	चन्द्रव्याकरण	चन्द्रगोमी	मृच्छकटिकम	शूद्रक
स्वप्नवासवदत्ता	भास	विसुद्धिमग्ग	बुद्धघोष	योगाचार	असंग

गुप्तकाल की जानकारी के अभिलेख–

- प्रयाग प्रशस्ति (लेखक हरिषेण) – इसमें समुद्रगुप्त की उपलब्धियों का विवरण है।
- भितरी अभिलेख, जूनागढ़ प्रशस्ति (स्कन्दगुप्त से सम्बन्धित)
- मंदसौर प्रशस्ति (लेखक वत्सभट्टी), मानकुंवर अभिलेख, विलसढ़ का स्तंभ अभिलेख (कुमार गुप्त से सम्बन्धित)
- एरण अभिलेख (भानुगुप्त से सम्बन्धित)
- महरौली प्रशस्ति, साँची शिलालेख, उदयगिरि का शिलालेख, मथुरा स्तंभलेख, गढ़वा का शिलालेख (चन्द्रगुप्त द्वितीय से सम्बन्धित)
- इस काल का सर्वाधिक भव्य अवशेष दिल्ली का सुप्रसिद्ध लौह स्तंभ (महरौली) है।
- गुप्तकाल की सबसे बड़ी विशेषता ब्राह्मण धर्म व हिन्दू धर्म का पुनरूत्थान था।
- गुप्तकाल में विज्ञान ने बहुत अधिक उन्नति की। इस क्षेत्र में सबसे अधिक प्रगति गणित व ज्योतिष विज्ञान में हुई।

प्रमुख वैज्ञानिक ओर विद्वान हुए–

- आर्यभट्ट, वराहमिहिर, वागभट्ट, धन्वन्तरि, सुश्रुत, शालिहोत्र ऋषि, ब्रह्मगुप्त, भास्कर प्रथम, नागार्जुन आदि।
- गुप्तकालीन चित्रकला में शून्य सिद्धांत व दशमलव प्रणाली का विकास हुआ था।
- गुप्त कालीन चित्रकला के सर्वोत्कृष्ट नमूने अजंता और बाघ की गुफाओं में मिलते हैं।

- गुप्त काल में वर्ण व्यवस्था विद्यमान थी। गुप्तकाल षड्दर्शन का विकास हुआ जो कि भारतीय दर्शन की प्रमुख विशेषता है।
- गुप्त काल संस्कृत भाषा और साहित्य के विकास के दृष्टिकोण से स्वर्णयुग माना जाता है।
- गुप्त शासकों ने संस्कृत को अपनी राज भाषा घोषित की।
- गुप्त अभिलेखों की भाषा संस्कृत व लिपि ब्राह्मी में थी।

गुप्तकाल में कला, विज्ञान, साहित्य

- गुप्तकाल कला साहित्य के विकास की दृष्टि से भारतीय इतिहास का स्वर्ण युग/क्लासिकी युग कहलाता है।
- इस युग में मथुरा, बनारस, पटना कला के प्रमुख केन्द्र थे।

(1) मंदिर निर्माण कला

- नागर शैली का बाहुल्य था।
- गुप्तकाल में प्रधान शिखरों के साथ गौण शिखरों का निर्माण
- देवगढ़ का दशावतार मंदिर भारतीय मंदिर निर्माण में शिखर का पहला उदाहरण है।
- भितरगाँव (कानपुर) का मंदिर ईंटों से बना पहला मंदिर है।

(2) स्तूप

- सारनाथ का धमेख स्तूप ईटों का बना है।

(3) गुफाएँ

- अजन्ता की गुफाएँ कुल 29 (5 चैत्य + 24 विहार)
- बाघ की गुफाएँ – धार जिला (मध्यप्रदेश)
  - कुल सं.–09 बौद्ध धर्म से सम्बन्धित है।
  - खोज – 1818 डेंजर फिल्ड

(4) मूर्तिकला

- मथुरा, सारनाथ, पाटलिपुत्र मुख्य क्षेत्र है।
- अलंकृत प्रभामण्डल, केश सज्जा, मुद्रा आसन्न, सरलता विशेषता
- गुप्तकाल की तीन बुद्ध मूर्तियाँ उल्लेखनीय है।
  - सारनाथ की बुद्ध मूर्ति
  - मथुरा की बुद्ध मूर्ति
  - सुल्तानगंज की ताम्र निर्मित बुद्ध मूर्ति

- देवगढ़ की वराह की मूर्ति को अन्नतशायी कहा गया है।
- अजन्ता की गुफाओं में अब गुफा नं. (1–2,9–10,16–17) से ही चित्र मिलते हैं।
- अजन्ता की 16 वीं गुफा को उत्खनित करने का श्रेय वराहदेव को है। इस गुफा में मरणासन्न राजकुमारी का बहुत सुन्दर चित्र है।
- 16 वीं गुफा में बुद्ध महाभिनिष्क्रमणएवं अंधे तपस्वी माता–पिता का चित्र भी अंकित है।
- पहली, दूसरी गुफाओं में फारस देश के राजदूत का चित्र मिलता है।
- अजन्ता की पहली गुफा में कामदेव (मार विजय) का चित्र है।

गुप्त कालीन साहित्य

गुप्तकाल के एक अभिलेख में एक लाख श्लोकों वाली महाभारत का उल्लेख मिलता है।

शूद्रक का मृच्छकटिकम –

- यह 10 अंको में विभाजित गुप्तकालीन नाटक है।
- इसमें राज परिवार के स्थान पर जनसाधारण को नाटक का पात्र बनाया गया है।

अमर सिंह का अमरकोष

- इस गंथ में तीन काण्ड, 1533 श्लोक हैं।

कालिदास

- कालिदास को स्मिथ ने भारत का शेक्सपियर कहा है।
- पुलकेशियन के ऐहोल प्रशस्ति में कालिदास, भारवी के नामों का उल्लेख मिलता है।

गुप्तकालीन अन्य साहित्यकार

भास	– स्वप्नवासवदत्ता
भवभूति	– मालतीमाधव
विष्णु शर्मा	– पंचतंत्र
भारवी	– किर्रातार्जुनीयम्
माघ	– शिशुपालवध
श्री हर्ष	– नैषधचरित
विशाखदत्त	– मुद्राराक्षस
वात्स्यायन	– कामसूत्र

3. मुगलकाल में शिक्षा, भाषा, साहित्य, कला, स्थापत्य कला का विकास शिवाजी व मराठा स्वराज

- मुगलकाल को उसकी बहुमुखी सांस्कृतिक गतिविधियों के कारण भारतीय इतिहास का द्वितीय क्लासिकी युग कहा गया है।
- इस काल में स्थापत्य कला, वास्तुकला, संगीतकला, चित्रकला और साहित्य का विकास हुआ अर्थात् ललितकला की उन्नति हुई।

स्थापत्य कला

- मुगल सम्राट स्थापत्य कला के प्रेमी थे।
- मुगलकाल में ईरानी और हिन्दू स्थापत्य शैली के समन्वय द्वारा मुगलशैली का उद्‌भव व विकास हुआ।
- फर्ग्युसन ने इसे विदेशी शैली तथा हावेल ने इसे देशी व विदेशी शैलियों का उत्तम सम्मिश्रण बताया।

मुगल स्थापत्य की मुख्य विशेषता

- संगमरमर के पत्थरों पर हीरे जवाहरात से की गई जड़ावत (पित्राडूरा)
- महलो तथा विलासभवनों में बहते पानी का प्रयोग।

बाबर के समय की स्थापत्य कला

- मुगलकालीन स्थापत्य कला की शुरूआत बाबर के समय से होती है।
- बाबर को दिल्ली व आगरा की तुर्क तथा अफगाान सुल्तानों द्वारा निर्मित इमारत पसंद नहीं आई।
- बाबर ग्वालियर में मानसिंह व विक्रमाजीत महलों की स्थापत्य शैली से अत्यधिक प्रभावित हुआ।
- बाबर के महल केवल नमूने बने जो अधिक समय तक काल के प्रहारों को न सह सकें। उनकी केवल दो ईमारतें ही बची हैं।
  (1) पानीपत की काबुली बाग की विशाल मस्जिद (1529 ई.)
  (2) रूहेलखण्ड (उत्तरप्रदेश) संभलकी जामा मस्जिद।
- बाबर ने ज्यामितीय विधि पर आधारित एक उद्यान नूर अफगान के नाम से आगरा में लगवाया (पहला बगीचा)

हूमांयू के समय मुगल स्थापत्य –

- हुँमायूँ भी यद्यपि कलाप्रेमी था किन्तु उसकी कोई कलात्मक ईमारत नही बची।
- हुँमायूँ ने दिल्ली में दिन पनाह (विश्व का शरणस्थल) नामक एक नगर का निर्माण करवाया (1533) जो आज पुराने किले के नाम से विख्यात है।
- हुँमायूँ ने दो अन्य ईमारते भी बनवाई–
  (1) आगरा के निकट मस्जिद
  (2) हिसार के फतेहबाद के निकट (फारसी शैली में)

अकबर कालीन स्थापत्य कला

अकबर के शासन काल की सबसे पहली ईमारत दिल्ली में हुँमायूँ का मकबरा है जिसे अकबर की सौतेली माँ हाजी बेगम ने 1565 में बनवाया था। इसकी निम्न विशेषताएं है –

- दोहरी गुम्बदवाल भारत का पहला मकबरा है।
- इसमें मुगलवंश के सर्वाधिक लोगों को दफनाया गया है।
- इस मकबरे को ताजमहल का पूर्वागामी कहा जाता है।
- यह मकबरा फारसी आदर्श की भारतीय अभिव्यक्ति है।
- इसमें पहली बार चारबाग पद्धति का प्रयोग किया गया।
- इसमें प्रधान कारीगर मीरक मिर्जा ग्यासी भी ईरानी (फारसी) था।
- 1857 की क्रान्ति के समय बहादुरशाह जफर तथा उसके तीन पुत्र को यही 22 सितम्बर 1857 को हड़सन ने गिरफ्तार किया था।
- 1993 ई. में इसे यूनेस्को ने विश्वधरोहर सूची में शामिल किया।
- इस मकबरे की योजना फारसी मॉडल एवं वास्तुकला पंचरथ रचना से ली गई।
- अकबर के काल में सुन्दर ईमारतें बनी, उनके बारे में अबुल फजल ने कहा है कि "सम्राट सुन्दर ईमारतों की योजना बनाता है और अपने मस्तिष्क और हृदय के विचारों को पत्थर और गारे का रूप दे देता है। "
- अकबर ने हिन्दू मुस्लिम शैलियों का समन्वय किया और एक नई शैली का विकास किया।
- अकबर की नवीन शैली का सबसे पहला नमूना आगरा का लाल किला (कासीम खाँ के नेतृत्व में) है।
- आगरा के किले की रूपरेखा मानसिंह द्वारा बनाये गये ग्वालियर किले से मिलती जुलती है।
- इस किले में अकबरी महल (कोई सजावट नहीं) और जहाँगीरी महल (हिन्दू डिजाईन पर) है।
- इसमें 500 से अधिक महल हैं।
- अकबर द्वारा बनाया गया लाहौर का किला भी लगभग आगरा के किले के समान ही है (जहाँगीरी महल की नकल)
- अकबर की शिल्प कला की सबसे बड़ी सफलता उसकी नई राजधानी फतेहपुर सीकरी की सुन्दर ईमारतों में है (1571) जिन्हें 1986 ई. में यूनेस्को ने विश्वधरोहर की सूची में शामिल किया है। इसमें निम्न महल है –
  - दीवाने खास (एक घनाकार आकृति)
  - दीवाने आम (एक आयताकार)
  - पंचमहल/हवामहल (पिरामीड के आकार की नालन्दा के बौद्ध विहार ही प्रेरणा के आधार पर)
  - मरियम का महल (मुगल चित्रकारी पर आधारित)
  - जोधाबाई का महल (सीकरी का सबसे बड़ा महल, गुजराती शैली का प्रभाव)
  - बीरबल महल
  - जामा मस्जिद (फतेहपुर का गौरव कहा जाता है)
  - बुलन्द दरवाजा (एशिया का सबसे ऊँचा प्रवेश द्वार गुजरात जीत की खुशी में)
  - शेख सलीम चिश्ती का मकबरा
  - ईस्लाम शाह का मकबरा (पहली वर्गाकार मेहराब का प्रयोग)
  - तुर्की सुल्ताना का महल (पार्सी ब्राउन ने इसे स्थापत्य कला का मोती कहा है।
  - फर्ग्यूसन ने ठीक ही कहा हे कि फतेहपुर सीकरी किसी महान व्यक्ति के मस्तिष्क का प्रतिबिम्ब है।
  - अपने शासन काल के अन्तिम समय में अकबर ने इलाहाबाद चालीस स्तम्भों वाले एक विशाल किले का निर्माण कराया।

Note:- 1561 ई. में अकबर की धाय माँ अनगा ने पुराने किले के सामने खेरूल मंजिल मस्जिद का निर्माण करवाया। इसमें सहायता दिल्ली के गवर्नर शिहाबुदीन ने की थी।

गुरू सलीम चिश्ती के मकबरे में जहाँगीर गवर्नर लाल बलुआ पत्थर के स्थान पर संगमरमर लगवाया था ने।

जहाँगीर की स्थापत्य कला

- जन्म – 13 अगस्त 1565
- राज्याभिषेक – 3 नवम्बर, 1605 (आगरा के किले में)
- जहाँगीर के काल में स्थापत्य कला में कोई महत्वपूर्ण विकास नहीं हुआ। जहाँगीर का ध्यान चित्रकला की ओर ज्यादा था।
- आगरा के पास सिकन्दरा में स्थित अकबर का मकबरा (जिसके निर्माण की योजना स्वयं अकबर ने बनाई थी किन्तु निर्माण जहाँगीर ने 1613 ई. में करवाया था। यह एक गुम्बद विहीन मकबरा है ।
- जहाँगीर के काल में नूरजहाँ के द्वारा बनाया गया एतमा दुधौला मकबरा प्रसिद्ध है। इसमें पहली बार पित्राडुरा का प्रयोग किया गया था। (आगरा)
- सहादरा (लाहौर) में जहाँगीर का मकबरा उसकी बेगम नूरजहाँ ने बनवाया था जिसका नक्शा स्वयं जहाँगीर ने बनाया था। इसके ऊपर संगमरमर का एक मंडप था जिसे बाद में सिक्खों ने उतार लिया था।
- एकमात्र शासक जहांगीर है जिसके समय कोई मस्जिद का निर्माण नहीं हुआ।
- जहाँगीर ने कश्मीर मे प्रसिद्ध शालीमार बाग की स्थापना की थी।
- जहाँगीर के शासनकाल के अन्तिम व शाहजहाँ के शासनकाल के प्रारम्भिक दिनों में निर्मित दिल्ली में अब्दुल रहीम खान खाना का मकबरा है, जो मुख्य रूप से हुँमायूँ के मकबरे की प्रतिकृति है। पर कुछ मामलों में इसमें ताजमहल का पूर्वाभास हांता है।

शाहजहाँ कालीन स्थापत्य कला

- शाहजहाँ का शासन काल मुगल स्थापत्य का चरमोत्कर्षक काल था इसलिए शाहजहाँ को निर्माताओं का प्रिंस कहा जाता है।
- आर्शीवाद लाल श्रीवास्तव ने शाहजहाँ के शासनकाल को वास्तुकला या स्थापत्य कला की दृष्टि से स्वर्णकाल कहा है।
- आगरा के किले में स्थित दीवानेआम (1627) संगमरमर से बनी शाहजहाँ की पहली ईमारत है।
- दीवानेखास (1637), मोती मस्जिद (आगरा किले की सबसे सुन्दर व आकर्षक ईमारत (1654), शीशमहल, खासमहल, नगीना मस्जिद आदि आगरे के किले में ईमारते बनवाईं।

दिल्ली की ईमारतें –

- शाहजहाँ नें 1638–1648 ई. के बीच दिल्ली में शाजहाँबाद के नाम से राजधानी बनाई।
- शाहजहाँ ने दिल्ली में 1648 ई. में सबसे महत्वपूर्ण ईमारत लाल किला बनवाया जिसका शिल्पकार हमीद अहमद थे। इसमे दो स्तर बनवाये – पश्चिमी द्वार – लाहोरी द्वार, दक्षिणी द्वार।
- इसी लाल किले को 2007 ई. में यूनेस्को ने विश्वधरोहर की सूची में शामिल किया। इसमें शाहजहाँ ने दीवाने आम (इसमें तख्ते तावज रखा जाता था।)
- दिवाने खास (इसके अन्दर की छत चाँदी की बनी है, अमीर खुसरो ने इसके लिए कहा है कि अगर दुनिया में कहीं स्वर्ग है तो यहीं है, यहीं है ।
- लाल किले के पास ही 1648 ई. में जामा मस्जिद बनवाई।
- शाहजहाँ ने अपनी प्रिय पत्नी अर्जुमंद बानो की याद में मुमताज महल का मकबरा बनाया जिसे ताजमहल कहते है।
- ठसका निर्माण 1631–53 कुल 22 वर्षों मे 9 करोड़ रू. की लागत से हुआ।
- ताजमहल का मकबरा दिल्ली में स्थित हुमायूं के मकबरे से प्रेरित था।

- इसका योजनाकार उस्ताद अहमद और प्रधान मिस्त्री उस्ताद इंसा था।
- इसका आकार आयताकार है।
- हावेल के अनुसार यह भारतीय स्त्री जाति की देवतुल्य ईमारत है।
- ताजमहल दामपत्य प्रेम का प्रतीक और कला प्रेमियों का मक्का बन गया है।
- 1983 ई. में इसे यूनेस्को ने विश्व धरोहर की सूची में शामिल किया।
- दिल्ली में निशांत बाग निर्माण शाहजहाँ के काल में ही हुआ।
- औरंगजेब कालीन ईमारतें (पतनोमुख स्थापत्य कला)
- शाहजहाँ की मृत्यु के बाद मुगल स्थापत्य कला का पतन आरम्भ हो गया। औरंगजेब को कला के प्रति कोई रूचि नहीं थी।
- इसने बहुत कम ईमारत बनवाई तथा जो भी बनवाई वो बहुत साधारण थी।
- दिल्ली के लाल किले में मोती मस्जिद, लाहौर में जामा मस्जिद और लाहौर में बादशाही मस्जिद (1674) तथा औरंगाबाद के पास अपनी पत्नी रबिया–उर–दोराब का मकबरा भी बनवाया (1678)। जिसे बीबी का मकबरा कहा जाता है।
- इसे ताजमहल की घटिया (फूहड़) नकल माना जाता हे और इसे दक्षिण का ताजमहल भी कहा जाता है।
- मुगलकाल में अन्य मकबरे भी बने जैसेः–
  (i) जहाँआरा का मकबरा– इस पर लिखा हुआ है कि सिवाय हरी घास के मेरी कब्र को किसी से भी ना ढका जाये क्योंकि केवल घास ही इस दीन की कब्र ढकने के लिये काफी है।
  (ii) खान–ए–खाना का मकबरा – दिल्ली
  (iii) हजरत निजामुद्दीन की दरगाह
  (iv) मिर्जा गालिब का मकबरा
  (v) सफदरजंग का मकबरा
  (vi) जन्तर–मन्तर – जयसिंह द्वितीय द्वारा बनाई गई वेधशाल, इन्होने 5 वेधशाल बनवाई थी।
  (vii) दिल्ली, जयपुर, उज्जैन, मथुरा, वाराणसी।
  (viii) आगरा के अन्दर एक मस्जिद थी जिसे मस्जिद जहाँनामा कहा जाता है इसे शाहजहाँ की बड़ी पुत्री जहाँआरा ने बनवाया था।

मुगलकालीन चित्रकला

- मुगल साम्राज्य की स्थापना के साथ ही चित्रकला में नवजीवन आ गया
- मुगल सम्राट चित्रकला के महान प्रेमी थे।
- सर्वप्रथम हैरात में बहजाद (पूर्व का रैफेल) नामक चित्रकार ने चित्रकला की एक नई शैली आरम्भ की थी।
- इस एक मात्र चित्रकार का वर्णन तजुक ए–बाबरी (बाबरनामा) में मिलता है।
- मुगल चित्रकला की नींव हुँमायूँ के शासनकाल में पड़ी (चित्रकला का उद्‌भव मुगलकाल के हुँमायूँ के शासनकाल में हुआ।
- हुँमायूँ ने निर्वासन के दौरान उसने मीर सैयद अली (बहजाद का शिष्य) अरी अब्दुल समद नामक दो फारसी चित्रकारों की सेवा प्राप्त की और इन दोनों को अपने साथ भारत ले आया (1555)।
- इनके चित्रों में अधिकांशत ; चित्र सूती वस्त्रों पर चित्रित किये गये हैं।
- इनकी शैलियों में ईरानी, भारतीय और यूरोपीयन शैलियों का सम्मिश्रण पाया जाता है।